रविंदासीया धर्म के नियम

1. हमारा रहबर –
   सतगुरु रविदास महाराज जी
2. हमारा धर्म –
   रविदासिया
3. हमारी धार्मिक पुस्तक –
   अमृतवाणी सतगुरु रविदास महाराज जी
4. हमारा कौमी निशान साहिब :
5. हमारा सम्बोधन –
   जै गुरुदेव
6. हमारा महान् तीर्थ-अस्थान –
   श्री गुरु रविदास जन्म अस्थान मन्दिर
   सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू.पी.)

जगत गुरू रविदास महाराज जी

नोट : * जनगणना में अपना रविदासीया धर्म जरूर लिखवाएँ जी।
* अपने सभी सामाजिक और धार्मिक कार्य रविदासीया धर्म और अमृतबाणी के अनुसार करें।

7. हमारा उद्देश्य –
   सतगुरु रविदास जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार। इसके साथ-साथ महाऋषि भगवान वाल्मीकि जी, सतगुरु नामदेव जी, सतगुरु कबीर जी, सतगुरु त्रिलोचन जी, सतगुरु सैन जी तथा सतगुरु सधना जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार करना।
   – सभी धर्मों का सम्मान करना, मानवता के साथ प्रेम करना तथा सदाचारी जीवन व्यतीत करना।

आरती

भावार्थ - सतिगुरू रविदास महाराज जी मानवता को सभी भ्रमों से मुक्त होकर हरि का पावन नाम जपने रूपी सच्ची आरती करने का पावन उपदेश देते हैं।

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे।। हरि के नामु बिनु झूठे सगल पासारे।।१।।(रहाउ)	हे हरि जी! आपका नाम सिमरन करना ही आपकी सच्ची आरती है एवं आपको स्नान करवाना है। आप जी के नाम के बिना संसार के सभी पासारे (कारोबार) झूठे हैं।
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे।।	आप जी का नाम जपना ही आरती के लिए आसन लगाना है और आप का नाम जपना ही केसर रगड़ने वाली शिला है और आपका नाम जपना ही आप पर केसर छिड़कना है।
नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नाम ले तुझहि कउ चारे।।१।।	आप जी का नाम जपना ही पानी है, आप जी का नाम ही चंदन है और आप जी का नाम ही चंदन रगड़ कर आपको चढ़ाना है।
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे।।	आप जी का नाम ही आरती के लिए दीपक है, नाम रूपी बाती ही दीपक में डाली जाती है और आपका नाम ही उस दीपक में डाला गया तेल है।
नामु तेरे की जोति लगाई भइयो उजिआरो भवन सगलारे।।२।।	आप के नाम की ही ज्योति जगाई है, जिस से सब भवनों भाव खण्डों-ब्रहमण्डों में आप जी का नाम जगमगा रहा हैं भाव आप जी के नाम का प्रकाश हो रहा है।
नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे।।	आप का नाम ही धागा है और आपका नाम ही फूलों की माला है। आपके नाम के बिना सारी वनस्पति के अठारह भार अपवित्र हैं।
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तूही चवर ढोलारे।।३।।	आप जी की बनाई सृष्टि में सब कुछ आप का ही दिया हुआ है, मैं आपको क्या अर्पण करूँ? आप जी का नाम ही आप जी पर चंवर झुलाना है।
दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे।।	अठारह पुराणों, अठाहट तीर्थों और चारों खाणियों (अंडज, जेरज, सेतज और उतभुज) में सारा संसार विचर रहा है।
कहै रविदासु नामु तेरो आरती सतिनामु है हरि भोग तुहारे।।४।।	सतिगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं कि हे हरि जी! आप जी का नाम उच्चारण करना ही मेरे लिए आपकी सच्ची आरती करना है। हे हरि जी मैं सतिनाम का ही उच्चारण करके आप जी को भोग लगाता हूँ।

सतिगुरू सरवण दास जी

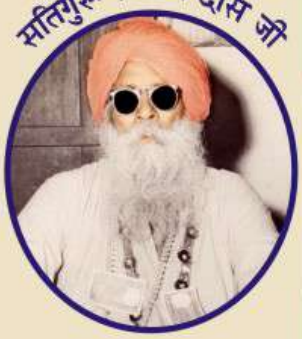

संत सुरेंद्र दास बाबा जी

Ravidassia Dharam Parchar Asthan
Vill. Kahanpur, P.O. Raipur-Rasoolpur, Distt. Jalandhar (Punjab)
Email: ravidassiadharam@gmail.com Website: www.ravidassiadharam.org
facebook : ravidassiadharamparcharasthan
Youtube : Ravidassia Dharam Parchar Asthan, Kahanpur Jalandhar